

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

सुप्रिया सुले का आरक्षण विवाद : माफी और सुरक्षा की मांग ने बढ़ाई राजनीतिक हलचल

Sanket Morankar

Published on 22 Sep 2025



राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी-शरद पवार गुट) की वरिष्ठ नेता और सांसद सुप्रिया सुले इन दिनों एक आरक्षण संबंधी बयान को लेकर विवादों में घिर गई हैं। उनका यह बयान न केवल विपक्षी दलों बल्कि सामाजिक संगठनों के लिए भी बहस का विषय बन गया है। इस विवाद के बीच अब उनसे माफी मांगने और उनकी सुरक्षा बढ़ाने की मांग जोर पकड़ रही है।

मामला तब गरमाया जब सुप्रिया सुले ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कहा कि “आरक्षण का मुद्दा बार-बार उठाना समाज को तोड़ने वाला कदम है।” उन्होंने यह भी जोड़ा कि हमें समाज को जोड़ने वाली राजनीति करनी चाहिए।

- हालांकि उनके बयान को कई संगठनों ने आरक्षण विरोधी बताते हुए इसका कड़ा विरोध किया।
- आरक्षण समर्थक समूहों ने कहा कि सुप्रिया सुले का बयान वंचित तबकों की भावनाओं को आहत करता है।
- बयान के तुरंत बाद कई सामाजिक संगठनों ने प्रदर्शन और नारेबाजी की।
- कुछ संगठनों ने सुप्रिया सुले से सार्वजनिक तौर पर माफी की मांग की।
- वहीं कुछ संगठनों ने उनके खिलाफ प्रदर्शन और धरना आयोजित करने का एलान किया है।

एक संगठन के प्रतिनिधि ने कहा—

“हम सुप्रिया सुले से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने बयान पर माफी मांगें और स्पष्ट करें कि वे आरक्षण का समर्थन करती हैं।”

विवाद बढ़ने पर सुप्रिया सुले ने सफाई दी कि उनका इरादा किसी वर्ग या समुदाय की भावनाओं को आहत करने का नहीं था।

- उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य केवल समाज को एकजुट करने पर जोर देना था।
- साथ ही उन्होंने यह भी जोड़ा कि आरक्षण का महत्व और जरूरत वे भलीभांति समझती हैं।

सुप्रिया सुले ने कहा—

“मैंने केवल समाज में एकता की बात कही थी। मेरी मंशा किसी को चोट पहुंचाना नहीं था।”

- भाजपा और अन्य विपक्षी दलों ने इस बयान को मुद्दा बनाते हुए एनसीपी पर हमला बोला।
- विपक्ष का कहना है कि सुप्रिया सुले ने **आरक्षण के महत्व को कमतर** दिखाने की कोशिश की है।
- वहीं एनसीपी के कई नेताओं ने उनका बचाव करते हुए कहा कि उनके बयान को **तोड़ा-मरोड़ा** गया है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद **महाराष्ट्र की राजनीति** में एक नया मोड़ ला सकता है, क्योंकि आरक्षण यहां का संवेदनशील और महत्वपूर्ण मुद्दा है।

- लगातार बढ़ते विरोध और आंदोलनों को देखते हुए अब **सुप्रिया सुले की सुरक्षा बढ़ाने की मांग** भी उठी है।
- समर्थकों और पार्टी नेताओं का कहना है कि विरोध प्रदर्शन के बीच उनकी सुरक्षा पर खतरा हो सकता है।
- वहीं विरोधी संगठन उनकी **सार्वजनिक माफी** की मांग पर अड़े हैं।

एक एनसीपी नेता ने कहा—

“सुप्रिया जी ने कुछ भी गलत नहीं कहा है। फिर भी यदि लोग आहत हुए हैं, तो संवाद के जरिए हल निकाला जाना चाहिए। उनकी सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं हो सकता।”

- आरक्षण समर्थक समूहों का कहना है कि इस तरह के बयान से **वंचित और पिछड़े वर्गों में असुरक्षा** की भावना बढ़ सकती है।
- उनका आरोप है कि राजनीतिक दल चुनावी लाभ के लिए **आरक्षण को कमजोर करने की कोशिश** करते हैं।
- संगठनों ने चेतावनी दी है कि अगर सुप्रिया सुले ने माफी नहीं मांगी, तो विरोध और तेज होगा।
- राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि यह विवाद आने वाले **महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव** पर असर डाल सकता है।
- सुप्रिया सुले को अब यह तय करना होगा कि वे माफी मांगकर विवाद को शांत करती हैं या राजनीतिक बहस को और गहराई देती हैं।
- आरक्षण जैसे मुद्दे पर कोई भी बयान **राजनीतिक दलों के लिए दोधारी तलवार** साबित हो सकता है।

सुप्रिया सुले का यह बयान और उस पर उपजे विवाद ने महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर **आरक्षण की संवेदनशीलता** को उजागर कर दिया है।

- एक ओर, सामाजिक संगठन माफी और स्पष्ट रुख की मांग कर रहे हैं।
- दूसरी ओर, एनसीपी का दावा है कि बयान को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है।
- इस बीच, उनकी सुरक्षा को लेकर भी चिंता बढ़ी है।

स्पष्ट है कि आने वाले दिनों में यह विवाद न केवल **महाराष्ट्र की राजनीति** बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा का केंद्र बन सकता है।